संगतकार (मंगलेश डबराल)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत कविता **'संगतकार'** कवि डबराल की एक प्रतीकात्मक कविता है। इसमें बताया गया है कि जिस प्रकार गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार सहायक कलाकारों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है, उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन में नायक कहे जाने वाले सफल व्यक्ति की सफलता में अनेक लोगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। गायन में यदि मुख्य गायक के संगतकार न हों अथवा वे उसका भली प्रकार साथ न दें तो उसका गायन आकर्षणहीन हो जाता है। उसी प्रकार यदि सफल व्यक्ति के जीवन से उसकी सफलता में सहायक रहे संगतकारों के योगदान को निकाल दिया जाए तो वह व्यक्ति भी नायक न होकर एक आम व्यक्ति ही नज़र आता है। मगर यह जीवन की विडंबना ही है कि सफलता में सहायक बने लोगों की सदैव उपेक्षा की जाती है। वे सदैव गुमनामी के अँधेरे में खो जाते हैं। कविता में कवि ने समाज की इसी संवेदनहीनता को व्यक्त किया है। कवि यही बताना चाहता है कि यदि सफलता में सहायक बने लोग स्वयं को प्रकाश में नहीं लाते हैं तो यह उनकी कमज़ोरी अथवा विवशता नहीं होती, वरन् वह उनकी त्यागशीलता और मानवता ही होती है, जोकि वे दूसरों को ऊँचा उठाने के लिए स्वयं दब जाते हैं। संगतकार ऐसे ही त्यागशील व्यक्तियों का प्रतीक है। कवि की संगीत के प्रति सूक्ष्म समझ और चित्रात्मक-कौशल भावों को मूर्त रूप प्रदानकर एक संपूर्ण बिंब को आँखों के सामने उपस्थित कर देते हैं।

कविताओं का भावार्थ

1. **मुख्य गायक के चट्टान ··············· एक अनहद में।**
   भावार्थ– प्रस्तुत पद्य में गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्त्व पर विचार किया गया है। कवि कहता है कि मुख्य गायक के चट्टान से भारी और ऊपर चढ़ते गंभीर स्वर का साथ देती एक और सुंदर, कमज़ोर, कंपायमान-सी आवाज़ सुनाई देती है। यह आवाज़ जिस सहायक कलाकार की होती है, उसे ही संगीत की भाषा में संगतकार कहा जाता है। यह संगतकार प्रायः मुख्य गायक का छोटा भाई, उसका शिष्य या उस्ताद के पास पैदल चलकर दूर से संगीत सीखने आने वाला उसका कोई रिश्तेदार होता है। कवि संगतकार की भूमिका को स्पष्ट करता हुआ कहता है कि वह (संगतकार) मुख्य गायक की ऊँची गंभीर आवाज़ से अपनी आवाज़ प्राचीनकाल से ही मिलाता आया है; अर्थात् गायन में संगतकार की भूमिका प्राचीनकाल से ही विद्यमान रही है। मुख्य गायक जब गीत की प्रथम पंक्ति गाने के बाद अंतरे की जटिल तान भरता है अर्थात् गीत के अगले चरण को उठाने में मग्न हो जाता है तो उसे सरगम का भी ध्यान नहीं रहता, जिसके परिणामस्वरूप वह स्वरों के जंगल में भटकने लगता है। उसे उस समय केवल अनहद (दोनों कान बंद कर ध्यानमग्न होने पर आने वाली ध्वनि) ही सुनाई देता है।

2. **तब संगतकार ही··············समझा जाना चाहिए।**
   भावार्थ– कवि कहता है कि जब गायक अनहद की अवस्था में पहुँचकर सरगम से भटक जाता है, तब संगतकार ही प्रथम पंक्ति के मूलस्वर (आलाप) को सँभाले रहता है और गायक को पुनः मूलस्वर पर लौटा लाता है। कवि ने यहाँ संगतकार के लिए अनेक उपमान प्रयुक्त किए हैं। वह कहता है मूलस्वर को संगतकार ऐसे सँभालता है, मानो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान समेटता हो। मानो वह गायक को उसके बचपन की उस समय की याद दिलाता हो, जब वह नया-नया गाना सीख रहा था। स्वरों को ऊँचा उठाने के खेल में जब उसका गला बैठने लगता है, स्वर बुझता हुआ प्रतीत होता है, उसी समय संगतकार का स्वर उसको सांत्वना देने के लिए प्रविष्ट हो जाता है। मानो वह उससे कह रहा हो कि तुम अकेले नहीं हो, तुम्हारा साथ निभाने के लिए मैं हूँ, तुम तो बस निश्चिंत होकर अंतरा उठाते जाओ, बाकी सबकुछ मैं सँभाल लूँगा। वह उसे यह भी आश्वस्त करता है कि गाया जा चुका राग फिर से गाया जा सकता है। इतना साहसी होने पर भी संगतकार की आवाज़ में जो हिचक या कंपन स्पष्ट अनुभव होता है, उसे उसकी विफलता नहीं समझना चाहिए, बल्कि उसकी मनुष्यता समझना चाहिए; अर्थात् वह भी यदि चाहे तो मुख्य गायक बन सकता है, किंतु मानवता का परिचय देता हुआ वह मुख्य गायक को ऊपर उठाने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझता है; इसीलिए वह अपने स्वर को कभी भी मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा नहीं रखता।

शब्दार्थ

गरज = ऊँची, गंभीर आवाज। **अंतरा** = गीत की टेक। **जटिल** = कठिन। **लाँघकर** = पार कर। **समेटना** = एकत्र करना। **नौसिखिया** = नया-नया सीखने वाला। **सप्तक** = संगीत के सात स्वर। **अस्त होना** = छिप जाना। **ढाँढस बँधाना** = सांत्वना देना। **हिचक** = संकोच, झिझक। **विफलता** = असफलता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंदर कमज़ोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज़ में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीनकाल से *(CBSE 2015)*

1. **मुख्य गायक का स्वर कैसा होता है–**
(क) कोयल-सा मीठा (ख) चट्टान जैसा भारी
(ग) रुई जैसा मुलायम (घ) तीर जैसा पैना।
2. **मुख्य गायक के स्वर का साथ देती आवाज़ किसकी है–**
(क) संगतकार की (ख) उसके गुरु की
(ग) उसके नौकर की (घ) किसी की नहीं।
3. **कवि ने संगतकार को माना है–**
(क) उसका शिष्य (ख) छोटा भाई
(ग) दूर का रिश्तेदार (घ) ये सभी।
4. **संगतकार किसकी गरज में अपनी गूँज मिलाता आया है–**
(क) अपने भाई की (ख) अपने पिता की
(ग) मुख्य गायक की (घ) अपने सेवक की।
5. **संगतकार की आवाज़ की विशेषता है–**
(क) सुंदर (ख) काँपती
(ग) कमज़ोर (घ) ये सभी।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(2) या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था
तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ,
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर *(CBSE 2015, 23)*

1. **मुख्य गायक अपने ही सरगम को किस कारण लाँघ जाता है?**
(क) गाने की रौ में भटकने के कारण
(ख) संगतकार द्वारा साथ देने के कारण
(ग) संगतकार द्वारा साथ न देने के कारण
(घ) संगतकार नौसिखिया था।
2. **मुख्य गायक कहाँ भटक जाता है?**
(क) समुद्र के भँवरजाल में
(ख) बचपन की स्मृतियों में
(ग) तलवे की ताल में
(घ) शोर-गूँज के भँवरजाल में।
3. **मुख्य गायक के भटकने पर संगतकार उसकी सहायता कैसे करता है?**
(क) उसका सामान उठाकर
(ख) उसका हाथ पकड़कर
(ग) स्थायी को सँभालकर
(घ) बचपन की याद दिलाकर।
4. **''जब वह नौसिखिया था''– इस वाक्य में 'वह' किसके लिए आया है?**
(क) संगतकार
(ख) मुख्य गायक
(ग) संयोजक
(घ) बाँसुरी वादक।
5. **'तारसप्तक' में जब बैठने लगता है उसका गला। यहाँ 'तारसप्तक' से क्या अभिप्राय है?**
(क) धीमा स्वर
(ख) शुद्ध स्वर
(ग) दुगुना धीमा स्वर
(घ) दुगुना ऊँचा स्वर।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(3) तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर। *(CBSE 2015, 17)*

1. **तारसप्तक में किसका गला बैठने लगता है–**
(क) संगतकार का (ख) मुख्यगायक का
(ग) एक शिष्य का (घ) इनमें से किसी का नहीं।
2. **कौन मुख्य गायक का साथ छोड़ देता है–**
(क) उसकी कला (ख) उसकी प्रेरणा
(ग) उसकी पत्नी (घ) उसका भाई।
3. **तारसप्तक में मुख्य गायक की आवाज़ कैसी हो जाती है–**
(क) बहुत मधुर और सुरीली
(ख) बहुत भारी
(ग) जैसे राख जैसा कुछ गिर रहा हो
(घ) जैसे कोई गरज रहे हो।
4. **तारसप्तक का अर्थ है–**
(क) नीचे स्वर में गाए जाने वाले गीत
(ख) ऊँचे स्वर में गाए गीत
(ग) सात सुरों से युक्त संगीत
(घ) सात तारों वाला वाद्ययंत्र।
5. **मुख्य गायक को ढाँढ़स कौन बँधाता है–**
(क) संगतकार का स्वर (ख) उसका बड़ा भाई
(ग) उसका गुरु (घ) उसका शिष्य।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (क)।

(4) कभी कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए। *(CBSE 2016)*

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. **संगतकार यह बताने के लिए संगतकार का साथ देता है–**
(क) कि वह अकेला नहीं है
(ख) कि वह एक प्रतिष्ठित गायक है
(ग) कि वह अकेला नहीं गा सकता
(घ) कि मिलकर गाना अच्छा है।

2. **संगतकार की आवाज़ में क्या सुनाई देती है–**
(क) एक गूँज (ख) एक हिचक
(ग) एक पीड़ा (घ) एक खुशी।

3. **संगतकार द्वारा अपनी आवाज़ को ऊँचा न उठाने की कोशिश है–**
(क) उसकी सफलता (ख) उसकी विफलता
(ग) उसकी मनुष्यता (घ) उसकी योग्यता।

4. **काव्यांश में 'यों ही' का निहितार्थ है–**
(क) स्वार्थपूर्ण (ख) निःस्वार्थ
(ग) व्यर्थ (घ) कल्याणार्थ।

5. **कविता में मनुष्यता का अभिप्राय है–**
(क) दूसरों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाना
(ख) स्वयं पीछे रहकर दूसरों को आगे बढ़ाना
(ग) बढ़-चढ़कर अपनी योग्यता दिखाना
(घ) दूसरों की योग्यता से ईर्ष्या करना।

उत्तर— 1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'संगतकार' कविता के कवि का नाम है–**
(क) महादेवी वर्मा (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) मंगलेश डबराल (घ) नागार्जुन।

2. **संगतकार किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक है–**
(क) स्वार्थी व्यक्ति का (ख) परोपकारी व्यक्ति का
(ग) उदासीन व्यक्ति का (घ) क्रूर व्यक्ति का।

3. **ऊँचे स्वर में गाया जाने वाला गीत कहलाता है–**
(क) तारसप्तक (ख) पंचम सुर
(ग) तापसप्तक (घ) तारतम्य।

4. **मुख्य गायक के अनहद में पहुँचने पर–**
(क) श्रोता ताली बजाते हैं
(ख) मुख्य गायक घबरा जाता है
(ग) संगतकार उसका मज़ाक उड़ाता है
(घ) संगतकार स्थायी को सँभाले रहता है।

5. **संगतकार मुख्य गायक के ………… स्वर को उठाता है–**
(क) भड़कते (ख) बुझते
(ग) जलते (घ) अटकते।

6. **संगतकार अपने स्वर को मुख्य गायक से रखता है–**
(क) ऊँचा (ख) नीचा
(ग) समान (घ) तेज़।

7. **संगतकार पाठ के अनुसार संगतकार की मुख्य विशेषता क्या होती है–** *(CBSE SQP 2023-24)*
(क) उसकी मानवीयता
(ख) उसकी कलात्मक श्रेष्ठता
(ग) उसकी प्रतिभा प्रदर्शन की आकांक्षा
(घ) उसकी आत्म मुग्धता।

8. **कविता में नौसिखिया किसे कहा गया है–**
(क) संगतकार को (ख) मुख्य गायक को
(ग) शिष्य को (घ) रिश्तेदार को।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (घ) 5. (ख) 6. (ख) 7. (क) 8. (ख)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'संगतकार' के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर : संगतकार के माध्यम से कवि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के ऐसे व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है, जो दूसरों को सहयोग प्रदानकर उन्हें सफलता के शिखर तक पहुँचाते हैं। वे यह परोपकार निःस्वार्थ भाव से करते हैं; अतः उनकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

प्रश्न 2 : सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तो उसके सहयोगी उसे किस तरह सँभालते हैं?

उत्तर : सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचकर यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तो उसके सहयोगी उसे अनेक साधन उपलब्ध कराकर, प्रेरणाप्रद प्रसंग सुनाकर, हर प्रकार का सहयोग और सांत्वना देकर, उत्साहित और प्रोत्साहित करके उसका मनोबल बढ़ाते हैं। इस प्रकार एक संगतकार की तरह वे उसे सँभाल लेते हैं।

प्रश्न 3 : संगतकार की क्या भूमिका होती है? वह मुख्य गायक के स्वर को बिखरने से कैसे बचाता है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : संगतकार की मुख्य गायक के साथ विशेष भूमिका होती है। गायक जब कार्यक्रम प्रस्तुत करते-करते भावमग्न हो जाता है, उसे केवल अनहद का आभास होने लगता है, जिस कारण वह मूलस्वर से भटक जाता है। इस स्थिति में संगतकार ही मुख्य गायक को पीछे से सहयोग देकर पुनः मुख्य भूमिका में लेकर आता है।

प्रश्न 4 : संगतकार किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक है? 'संगतकार' कविता के आधार पर समझाइए।

उत्तर : संगतकार उस व्यक्ति का प्रतीक है, जो स्वयं पृष्ठभूमि में रहकर संबंधित व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उस व्यवस्था का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति की सफलता में हरसंभव सहयोग करता है। उदाहरणार्थ– संगीत के कार्यक्रम की प्रस्तुति में संगतकार मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसके गायन को प्रभावी व सफल बनाता है, किंतु कभी भी अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से उच्च नहीं रखता है।

प्रश्न 5 : संगतकार की आवाज़ को कमज़ोर और काँपती हुई क्यों कहा गया है?

उत्तर : संगतकार का काम मुख्य गायक के स्वर को सहारा देना होता है। इसलिए वह अपनी आवाज़ को कमज़ोर अर्थात् धीमी करके रखता है। अपनी आवाज़ को धीमी तथा सुरीली बनाए रखने की कोशिश में उसका गला काँपने लगता है। इसीलिए कवि ने उसकी आवाज़ को कमज़ोर और काँपती हुई कहा है।

प्रश्न 6 : मुख्य गायक के साथ संगतकार का होना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : मुख्य गायक के साथ संगतकार का होना इसलिए आवश्यक है; क्योंकि मुख्य गायक अकेले गायन को पूर्ण करने में समर्थ नहीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

होता। उसे अपने स्वर और साँस के संबल के लिए गायन में साथ देने वाले सहायक गायकों (संगतकारों) के साथ-साथ कुछ आवश्यक वाद्य यंत्रों और उन्हें बजाने वालों की भी आवश्यकता पड़ती है।

वास्तव में संगतकार मुख्य गायक की थकानभरी आवाज़ को आराम देने के लिए सहारा देते हैं, जिससे गायन ही प्रस्तुति में एकसमान लय और स्थायित्व कायम रहता है। इससे मुख्य गायक सुर से भटक नहीं पाता।

प्रश्न 7 : संगतकार जैसे व्यक्ति की जीवन में क्या उपयोगिता है? स्पष्ट रूप से समझाइए।

उत्तर: सभी के जीवन में संगतकार जैसे निःस्वार्थ सहायक की अत्यंत उपयोगिता है। यदि व्यक्ति के पास कला, प्रतिभा और साधन आदि सभी कुछ है तो भी जब तक कोई निःस्वार्थ और सच्चा सहायक नहीं मिलता, तब तक सफलता प्राप्त नहीं होती। संसार में जितने भी महान कलाकार, राजनेता और व्यवसायी हैं, सबकी सफलता में किसी-न-किसी सहायक का हाथ है। माता-पिता, गुरुजन और सन्मित्र ऐसे ही सहायक होते हैं।

प्रश्न 8 : 'संगतकार' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी स्थिति और भूमिका पर प्रकाश डालिए।

अथवा* संगतकार किसे कहते हैं? *(CBSE 2016)

उत्तर: मुख्य गायक के साथ गाने वाला अथवा वाद्य यंत्र बजाने वाला कलाकार या सहयोगी 'संगतकार' कहलाता है। मुख्य गायक के गायन की प्रस्तुति में संगतकार की स्थिति अथवा भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। वह मुख्य गायक के सुर और श्वास को बीच-बीच में विश्राम देकर गायन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने में सहयोग करता है। उसकी सहायता के बिना मुख्य गायक अपना गायन प्रभावी ढंग से पूर्ण नहीं कर पाता।

प्रश्न 9 : मुख्य गायक और संगतकार की आवाज़ में अंतर स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर: मुख्य गायक की आवाज़ (सुर) गंभीर, दमदार एवं प्रभावी होती है। इसके विपरीत संगतकार की आवाज़ मुख्य गायक की आवाज़ की तुलना में कमज़ोर और काँपती हुई होती है; क्योंकि अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से नीचा रखना उसका कर्तव्य होता है, फिर भी मुख्य गायक की तरह संगतकार की आवाज़ भी लय और सुर में स्थायी सुर का अनुसरण करती है।

प्रश्न 10 : संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

अथवा* 'संगतकार' कविता के आधार पर लिखिए कि मुख्य गायक के साथ संगतकार की भूमिका किन रूपों में होती है? *(CBSE 2023)

उत्तर: संगतकार निम्नलिखित रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं–

(i) ये मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाकर उसे बल प्रदान करते हैं।

(ii) जब मुख्य गायक अंतरे की जटिल तान में फँस जाता है तो संगतकार स्थायी को सँभालकर रखते हैं।

(iii) तारसप्तक में गाते समय जब मुख्य गायक-गायिकाओं का गला बैठने लगता है, तब संगतकार अपनी आवाज़ का सहयोग देकर उन्हें ढाँढ़स बँधाते हैं।

(iv) वे मुख्य गायक को याद दिलाते हैं कि वह अकेला नहीं है।

प्रश्न 11 : 'संगतकार' जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर: 'संगतकार' जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा फ़िल्म और संचार के क्षेत्र, प्रकाशन जगत्, चिकित्सा, कला आदि लगभग सभी क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। जीवन के इन सभी क्षेत्रों में सफलता कभी भी दूसरों के सहयोग के बिना प्राप्त नहीं होती। यदि ये सहायक उस काम में अपना संपूर्ण योगदान न दें तो सफलता संदिग्ध ही होती है, फिर भी ये लोग निःस्वार्थभाव से काम करते रहते हैं। कार्य की सफलता का श्रेय केवल नायक को मिलता है और ये लोग अँधेरे में ही रह जाते हैं।

प्रश्न 12 : 'संगतकार' कविता में कवि ने अंतरे को जटिल तान का जंगल क्यों कहा है? गायक उसमें क्यों खो जाता है? *(CBSE 2015)*

उत्तर: प्रायः गीतों के अंतरे में स्थायी की अपेक्षाकृत ऊँचे सुर प्रयुक्त होते हैं। अंतरे की प्रस्तुति के अंतर्गत ऊँचे स्वरों वाले कठिन सरगमों पर आधारित तानें भी प्रस्तुत की जाती हैं। अंतरे के विस्तार में कठिन-से-कठिन तानों के अधिकाधिक प्रयोग किए जाने के कारण ही कवि ने अंतरे को जटिल तान का जंगल कहा है, जिसमें गायक खो जाता है। अंतरे के इसी विस्तार के क्रम में गायक सरगम को लाँघता हुआ अनहद नाद के ऐसे संसार में चला जाता है, जहाँ उसे स्वयं और दूसरों के होने का आभास भी नहीं होता।

प्रश्न 13 : संगतकार द्वारा अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की कोशिश को कवि ने मनुष्यता क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2019)*

उत्तर: मुख्य गायक का साथ देते समय संगतकार अपनी आवाज़ को ऊँची नहीं करता। यह उसकी असफलता या अयोग्यता नहीं, बल्कि मनुष्यता है। वह मुख्य गायक की तरह ही प्रतिभावान् कलाकार है, लेकिन उसका उद्देश्य अपनी कला का प्रदर्शन करना नहीं, बल्कि मुख्य गायक का सहयोग करना है। जो व्यक्ति स्वयं पीछे रहता हुआ भी दूसरों को आगे बढ़ाता है, वही सच्चा मनुष्य है। इसीलिए कवि ने संगतकार का स्वर ऊँचा न करने की कोशिश को मनुष्यता कहा है।

प्रश्न 14 : 'संगतकार' कविता का उद्देश्य/संदेश स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2016)*

उत्तर: 'संगतकार' कविता का मुख्य उद्देश्य मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार अथवा नायक के सहयोगियों की भूमिका के महत्त्व को प्रकाशित करना है।

इस कविता के माध्यम से कवि ने इस तथ्य का रहस्योद्घाटन किया है कि नायक की सफलता केवल उसकी प्रतिभा की प्रतीक नहीं होती, बल्कि उसके सहयोगियों के योगदान और अद्भुत समन्वय को दर्शाती है। इनके अभाव में नायक सफलता के चरम बिंदु पर नहीं पहुँच सकता। संगतकारों की विनम्रता उनकी मानवीयता की परिचायक है, इसे हमें उनकी कमज़ोरी नहीं, अपितु समर्पण, त्याग और कर्तव्य समझना चाहिए।

प्रश्न 15 : संगतकार की आवाज़ में हिचक-सी क्यों प्रतीत होती है?

उत्तर— संगतकार की आवाज़ में हिचक-सी प्रतीत होने का कारण यह होता है कि वह यह सोचकर कभी खुला अथवा ज़ोरदार स्वर नहीं लगाता कि कहीं उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर पर हावी न हो जाए। वस्तुतः स्वर लगाने के दौरान अपनी सीमा को भली-भाँति समझने

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वाला संगतकार मुख्य गायक का सम्मान करते हुए ऐसा करता है। वह मुख्य गायक का सहयोग करना ही अपना कर्तव्य समझता है। यही कर्तव्य उसकी हिचक के रूप में प्रकट होता है।

प्रश्न 16 : संगतकार का दबा हुआ सुर उसकी पराजय का प्रतीक नहीं है, क्यों? ***(CBSE 2017, 18)***

***अथवा* संगतकार की हिचक क्या उसकी कमज़ोरी है? कैसे?**

***अथवा* संगतकार की आवाज़ में दिखाई देने वाली हिचकिचाहट क्या प्रदर्शित करती है?**

अथवा* संगतकार की हिचकती आवाज़ उसकी विफलता क्यों नहीं है?** ***(CBSE 2018)

उत्तर: संगतकार की आवाज़ की हिचकिचाहट उसकी कमज़ोरी को प्रदर्शित नहीं करती। वास्तव में संगतकार का उद्देश्य अपनी आवाज़ को मुखर करना न होकर मुख्य गायक की आवाज़ को संबल देना होता है, इसलिए वह अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए जान-बूझकर अपनी आवाज़ को नीचा रखता है। इस प्रकार उसका दबा हुआ सुर उसकी पराजय का नहीं, बल्कि उसके कर्तव्य-निर्वाह और मुख्य गायक के प्रति उसकी श्रद्धा एवं आदर का प्रतीक होता है।

प्रश्न 17 : 'संगतकार' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुण-संपन्न होकर भी समाज में आगे न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं?

उत्तर: संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुण-संपन्न होकर भी समाज में आगे न आकर प्रायः पीछे इसलिए रहते हैं; क्योंकि उनके जीवन का उद्देश्य अपने त्याग, तपस्या और परिश्रम से दूसरों को प्रगति के पथ पर चरमसीमा तक पहुँचाना होता है। वे दूसरों को प्रतिष्ठापित करने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। इसी कारण संगतकार सदैव जान-बूझकर अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से नीचा रखता है। यदि उसका स्वर मुख्य गायक से ऊँचा हो गया तो मुख्य गायक की महत्ता अथवा प्रतिष्ठा ही समाप्त हो जाएगी।

प्रश्न 18 : 'संगतकार' कविता में कवि ने सभी लोगों से क्या अपेक्षा की है? ***(CBSE 2020)***

उत्तर: 'संगतकार' कविता में कवि ने सभी लोगों से यह अपेक्षा की है कि वे संगतकार की अपनी आवाज़ नीची रखने की कोशिश को उसकी विफलता न समझें। यह उसकी मनुष्यता है, क्योंकि वह स्वयं पीछे रहकर अपने मुखिया को आगे बढ़ाना चाहता है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

कभी कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

1. **संगतकार यह बताने के लिए संगतकार का साथ देता है–**
(क) कि वह अकेला नहीं है
(ख) कि वह एक प्रतिष्ठित गायक है
(ग) कि वह अकेला नहीं गा सकता
(घ) कि मिलकर गाना अच्छा है।

2. **संगतकार की आवाज़ में क्या सुनाई देती है–**
(क) एक गूँज (ख) एक हिचक
(ग) एक पीड़ा (घ) एक खुशी।

3. **संगतकार द्वारा अपनी आवाज़ को ऊँचा न उठाने की कोशिश है–**
(क) उसकी सफलता (ख) उसकी विफलता
(ग) उसकी मनुष्यता (घ) उसकी योग्यता।

4. **काव्यांश में 'यों ही' का निहितार्थ है–**
(क) स्वार्थपूर्ण (ख) निःस्वार्थ (ग) व्यर्थ (घ) कल्याणार्थ।

5. **कविता में मनुष्यता का अभिप्राय है–**
(क) दूसरों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाना
(ख) स्वयं पीछे रहकर दूसरों को आगे बढ़ाना
(ग) बढ़-चढ़कर अपनी योग्यता दिखाना
(घ) दूसरों की योग्यता से ईर्ष्या करना।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **'संगतकार' कविता के कवि का नाम है–**
(क) महादेवी वर्मा (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) मंगलेश डबराल (घ) नागार्जुन।

7. **मुख्य गायक के अनहद में पहुँचने पर–**
(क) श्रोता ताली बजाते हैं
(ख) मुख्य गायक घबरा जाता है
(ग) संगतकार उसका मज़ाक उड़ाता है
(घ) संगतकार स्थायी को सँभाले रहता है।

8. **संगतकार मुख्य गायक की कैसी आवाज़ को सहयोग देता है–**
(क) गरजती (ख) गूँजती
(ग) टूटती-बिखरती (घ) सुरीली।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तो उसके सहयोगी उसे किस तरह सँभालते हैं?**

10. **संगतकार किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक है? 'संगतकार' कविता के आधार पर समझाइए।**

11. **संगतकार का दबा हुआ सुर उसकी पराजय का प्रतीक नहीं है, क्यों?**
***अथवा* संगतकार की हिचक क्या उसकी कमज़ोरी है? कैसे?**
***अथवा* संगतकार की आवाज़ में दिखाई देने वाली हिचकिचाहट क्या प्रदर्शित करती है?**
***अथवा* संगतकार की हिचकती आवाज़ उसकी विफलता क्यों नहीं है?**

12. **'संगतकार' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुण-संपन्न होकर भी समाज में आगे न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in